द 3 मिस्टेक्स ऑफ माइ लाइफ

BEST SELLER THE 3 MISTAKES OF MY LIFE का हिन्दी अनुवाद

चेतन भगत

भारत में सर्वाधिक बिक्री वाला लेखक

-न्यूयॉर्क टाइम्स

द 3 मिस्टेक आफ माइ लाइफ

कहानी, व्यापार, क्रिकेट व धर्म की

चेतन भगत

amazon publishing

Text copyright © 2016 by Chetan Bhagat

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without express written permission of the publisher.

Published by Amazon Publishing, Seattle

www.apub.com

Amazon, the Amazon logo, and Amazon Publishing are trademarks of Amazon.com, Inc., or its affiliates.

eISBN: 9781503945999

मेरे प्यारे देश को जिसने मुझे वापस बुला लिया

विषय सूची

परिचय
शुभ कामनाएं अध्याय
1 अध्याय
2 अध्याय
3 अध्याय
4 अध्याय
5 अध्याय
6 अध्याय
7 अध्याय
8 अध्याय
9 अध्याय
10 अध्याय
11 अध्याय
12 अध्याय
13 अध्याय
14 अध्याय
15 अध्याय
16 अध्याय
17 अध्याय
18 अध्याय
19 अध्याय
20 अध्याय
21 अध्याय
उपसंहार 1
उपसंहार 2

परिचय

यह हर दिन नहीं होता कि तुम सुबह उठते ही कम्प्यूटर के सामने बैठ जाओ और एक शनिवार को तुम्हें एक ई-मेल मिलता है-

द्वारा - ahd_businessman@gmail.com

भेजी गई - 12.08.2005. 11.40 P.M.

को - info@chetanbhagat.com

विषय - एक अंतिम नोट

प्रिय चेतन,

यह ई-मेल एक आत्म-हत्या नोट व अपराध स्वीकृति पत्र दोनों है। मैंने लोगों के साथ बहुत बुरा किया है इसलिए मेरे पास जीवित रहने का कोई कारण नहीं है। तुम मुझे नहीं जानते। मैं अहमदाबाद का एक साधारण सा लड़का हूँ, जो तुम्हारी लिखी किताबें पड़ता है। मुझे ऐसा लगा कि मैं अपनी बात तुम्हें बताऊँ। मैं किसी को नहीं बता सकता मैं अपने साथ क्या कर रहा हूँ। मैं हर वाक्य के बाद नींद की गोली ले रहा हूँ-मैंने सोचा कि मैं यह बात तुम्हें बताऊँगा।

मैंने अपना कॉफी का कप रख दिया और गिनने लगा। पांच वाक्य समाप्त हो चुके थे।

-मैंने अपने जीवन में तीन गलतियां की थीं-उनके विषय में मैं विस्तार से नहीं लिखूंगा।

खुदकुशी का मेरा यह फैसला भावुकता से नहीं लिया गया। मेरे परिचित जानते हैं कि मैं एक अच्छा बिज़नैसमैन हूँ और मैं थोड़ा भावुक भी हूँ। यह एक-दम से लिया गया फैसला नहीं है। इसके लिए मैंने पूरे तीन वर्ष इन्तजार किया है। हर दिन मैं ईश का मूक चेहरा देखता। पर कल जब उसने मेरी पेशकश को ठुकरा दिया तो मेरे पास और कोई रास्ता नहीं बचा।

मुझे इस बात का कोई अफसोस भी नहीं। संभव है तब मैं विद्या से एक बार और बात करना चाहता-पर इस वक्त वह विचार भी मुझे ठीक नहीं लगा।

मुझे अफसोस है कि मैं आपको परेशान कर रहा हूँ। पर मुझे महसूस हुआ मैं किसी को यह सब बताऊं। तुम लेखक हो, सुधरने के लिए तुम्हारे पास काफी रास्ते हैं। निःसंदेह तुम बहुत अच्छी पुस्तकें लिखते हो। अच्छा शुभ-सप्ताहांत!

शुभकामनाएं

17,18,19- अहमदाबाद में कहीं एक साधारण सा जवान बिजनैसमैन जिसने मुझे ई-मेल करते हुए 19 नींद की गोलियां निगल लीं और वह मुझसे आशा करता है कि मैं अपना सप्ताहांत खुशी से बिताऊं। कॉफी मेरे गले से नीचे नहीं उतर रही थी। मैं पसीने से तर-ब-तर हो रहा था।

‘एक, तुम देर से उठे। दूसरे उठते ही तुम सबसे पहले कम्प्यूटर पर बैठ गए। क्या तुम भूल गए कि तुम्हारा एक परिवार भी है?’ अनुषा ने कहा। इस सूरत में उसका साधिकार यह कहना काफी नहीं था कि अनुषा मेरी पत्नी है?

मैंने उससे वादा किया था कि मैं उसके साथ फर्नीचर खरीदने चलूँगा। खरीददारी का यह वादा दस हफ्ते पहले किया गया था?

उसने मेरा कॉफी का कप उठाया और मेरी कुर्सी को हिलाया।’ हमें कुछ डाइनिंग चेयर्स की जरूरत है?’ 'क्या बात है तुम कुछ परेशान लग रहे हो?’ उसने कहा। मैंने मॉनीटर की ओर इशारा किया।

मेल पढ़ते ही उसने कहा-‘बिजनैसमैन’? वह भी थोड़ा कांप गई।

‘और यह अहमदाबाद से है’, मैंने कहा 'वह सब हमें पता है।

‘क्या तुम्हें लगता है यह सत्य है?’ वह बोली, उसकी आवाज में कंपन था।’यह स्पैम नहीं’ मैंने कहा 'यह मुझे संबोधित की गई है।’

मेरी पत्नी ने बैठने के लिए स्टूल खींच लिया? मुझे लगा हमें वाकई कुछ कुर्सियों की जरूरत है।

‘सोचो हमें किसी और को यह बात बतानी चाहिए, अच्छा हो अगर उसके माता-पिता को बता पाएं 'उसने कहा’

‘कैसे? मुझे पता नहीं यह सन्देश मेरे पास कहां से आया’ मैंने कहा 'और हम

अहमदाबाद में किसे जानते हैं?’

‘हम अहमदाबाद में ही मिले थे याद है?’-अनुषा ने कहा। एक निराधार बात मैंने सोची। आई आई एम-ए हाँ, हम वर्षों पहले आईआईएम-ए में क्लास मेट थे 'तो’ मैंने कहा।

‘संस्थान को फोन करो, प्रो. बसंत या किसी और को’ उसने कहा और कमरे से बाहर निकल गई यह कहते हुए कि दाल जल रही है?

अपने से अधिक समझदार पत्नी का होना कई बातों में फायदेमद हैं। मैं कभी भी जासूस नहीं बन सकता।

मैंने इंटरनेट पर इंस्टीट्यूट का नंबर ढूढ़ा और फोन मिलाया। एक ऑपरेटर ने मुझे प्रो. बसंत के घर का नंबर मिला दिया। मैंने समय देखा, सिंगापुर में इस वक्त दस बजे थे और भारत में सुबह के साढ़े सात। मुझे यह अच्छा नहीं लगा कि सुबह सुबह किसी प्रो. को डिस्टर्ब किया जाए।

‘हैलो’ एक नींद से भरी आवाज थी। प्रोफेसर ही होंगे।

‘प्रो. बसंत, हाय। मैं चेतन भगत बोल रहा हूँ? आपका पुराना विद्यार्थी, याद है आपको?

‘कौन?’ उनकी आवाज में अपरिचय का पुट था। मैंने सोचा बुरी शुरूआत।

फिर मैंने उन्हें याद दिलाया जो विजय वो हमें पढ़ाते थे और कैसे हमने उन्हें वोट दिए थे कैम्पस के सबसे फ्रैंडली प्रोफेसर होने का। प्रशंसा ने अपना रंग दिखाया।’ ओह वह चेतन भगत’, उन्होंने कहा, जैसे वो हजारों को जानते हों, ‘तुम अब लेखक हो न?’

‘हां सर, वही।'-मैंने कहा।

‘अच्छा तो तुम पुस्तकें क्यों लिख रहे हो?’

‘बड़ा कठिन प्रश्न है सर।’

‘अच्छा, ठीक है, तो एक आसान सवाल है, तुम मुझे शनिवार को इतनी सुबह सुबह क्यों फोन कर रहे हो?’

मैंने उन्हें सारी बात बताई और ई-मेल उन्हें भेज दिया।

‘कोई नाम नहीं’ वे बोले, जैसे ही उन्होंने ई-मेल पढ़ा।

‘वह अहमदाबाद के किसी हस्पताल में हो सकता है? हो सकता है उसका चैक-अप हो रहा हो, हो सकता है वह मर गया हो। हो सकता है वह घर पर ही हो-कुछ भी हो सकता है।’ मैंने कहा।

मैं दुविधा में था, परेशान था। मैं अपने और उस लड़के के लिए मदद चाहता था। प्रोफेसर ने मुझसे एक अच्छा सवाल किया था मैं लिखता ही क्यों हूँ-ऐसी बातों में पड़ने के लिए?

‘हम हस्पतालों में पता कर सकते हैं?’ प्रोफेसर ने कहा, ‘मैं अपने स्टूडैंटस को कहता हूँ, पर अगर उसका नाम पता चल जाता तो काम आसान हो जाता, ओह ठहरो, उस लड़के का जी-मेल में एकाउंट होगा, हो सकता है वो ऑरकुट पर हो।’

‘और क्या'? कई बार अपने से अधिक चुस्त लोगों से बात करने पर भी समस्या हो जाती है।

तुम दुनिया से अलग रहते हो चेतन। ओरकुट एक नेटवर्क साइट है। जी-मेल का इस्तेमाल करने वाले वहां पर अपने साइन करते हैं। अगर वह लड़का वहां का मैंबर होगा तो वहां उसने साइन जरूर किए होंगे। और किस्मत अच्छी हुई तो हमें वहां से उसके नाम का पता चल जाएगा।

मैंने उसकी नॉब घुमाने की आवाज सुनी। मैं अपने पी. सी के सामने बैठ गया। मैं अभी ऑरकुट की साइट देख ही रहा था कि एकदम प्रोफेसर बसंत की आवाज सुनाई दी, ‘अहा, अहमदाबाद बिजनैसमैन। उसका थोड़ा सा परिचय है। नाम है जी.पटेल, दिलचस्पी-क्रिकेट में, बिजनैस में, मैथेमाटिक्स और-दोस्तों में? क्या तुम्हें नहीं लगता कि वह ऑरकुट का काफी इस्तेमाल करता होगा।’

‘प्रो. बसंत! आप क्या बात कर रहे हैं? मैं उसके सुसाईड नोट से परेशान हूँ जो उसने खास तौर पर मुझे भेजा है और आप मुझे उसकी हॉबीज के बारे में बता रहे हैं? आप मेरी कोई मदद कर सकते हैं या.....?’

कुछ समय की चुप्पी के बाद, ‘मैं अपने कुछ स्टूडैंटस के साथ किसी जवान पेशेंट की तलाश करता हूं जिसने नींद की गोलियां जरूरत से ज्यादा खाली हों और जिसका नाम जी-पटेल है। अगर हमें कुछ पता चला तो तुम्हें सूचना दे देंगे, ओ.के.।’

‘ठीक है सर,’ मैंने निश्चितता से सांस लेते हुए कहा?

‘अच्छा अनुषा कैसी है? तुम दोनों अपनी डेट पर जाने के लिए मेरी क्लास से बंक मार जाते थे और अब मुझे भूल गए हो।

‘सर! वो बिल्कुल ठीक है।’

‘अच्छा है, मैं हमेशा महसूस करता था कि वह तुमसे ज्यादा स्मार्ट है।’ खैर तुम्हारे उस लड़के की तलाश करते हैं। प्रो. ने कहा और बंद कर दिया।

फर्नीचर की खरीददारी के साथ, मैंने अपने आफिस का एक काम भी करना था, मेरा और माइकिल का बॉस न्यूयार्क से आने वाला था। माइकिल ने कहा था कि बॉस को प्रभावित करने के लिए हम 50 चार्टस के साथ अपने ग्रुप की प्रेजेंटेशन करें। मैं पिछले हफ्ते से रात एक बजे तक काम करता रहा फिर भी आधा ही हो पाया। ‘मेरा एक सुझाव है अगर तुम अन्यथा न लो। पर नहाने का विचार बनाओ'। मेरी पत्नी ने कहा।

मैंने उसे देखा।

‘एक विकल्प है।’ उसने कहा।

मैंने सोचा वह कभी-कभी ज्यादा ही सोचने लगती है। मैंने कोई जवाब नहीं दिया। ‘हां! हां! मैं नहा लूंगा’, मैंने कहा और फिर कम्प्यूटर की तरफ देखने लगी। विचार मेरे दिमाग में घूमते रहे। क्या मैं भी अपनी तरफ से कुछ

हस्पतालों में पता करूँ? क्या होगा, अगर प्रो. बसंत कुछ कर न पाए? क्या वे स्टूडैंटस को इकट्ठा न कर पाए? क्या होगा अगर जी. पटेल मर गया हो? और मैं क्यों इन बातों में उलझता जा रहा हूँ।

मैं शावर के नीचे खड़ा हो गया। फिर आ कर मैंने आफिस काम करने की कोशिश की पर व्यर्थ। मैं एक भी शब्द टाइप नहीं कर पाया।

मैंने नाश्ते के लिए भी मना कर दिया बाद में मुझे इसका पक्षाताप हुआ क्योंकि भूख और उत्सुकता साथ-साथ नहीं चल पाती।

1.33 पर मेरे फोन की घंटी बजी।

'हैलो' निःसंदेह प्रो. बसंत की आवाज थी, 'सिविल हास्पिटल में है? उसका नाम गोविन्द पटेल है, 25 वर्ष का है मुझे पता चला कि वो मेरा ही सैकिंड ईयर का स्टूडैंटस' है।

'और'

'और वह जिन्दा है। पर बात नहीं करता, अपने परिवार से भी नहीं। शायद सदमे में है।'

'डाक्टर क्या कहते हैं?' मैंने पूछा।

'कुछ नहीं, यह सरकारी हस्पताल है? तुम क्या उम्मीद करते हो? खैर वो उसका पेट साफ कर देंगे और उसे घर भेज देंगे। मैं अब ज्यादा फिक्र नहीं करूंगा। अपने एक स्टूडैंटस से कहूंगा कि वो शाम को जाकर एक बार फिर देख आए।'

'पर उसकी कहानी क्या है? हुआ क्या?'

'वो सब मुझे नहीं पता। सुनो तुम भी अपना दिमाग ज्यादा खराब न करो। इंडिया एक बड़ा देश है। ये सब यहां चलता है। तुम जितना भी इसमें उलझोगे पुलिस तुम्हें उतना ही परेशान करेगी।'

इसके बाद मैंने हस्पताल में फोन किया। पर ऑपरेटर इस केस के बारे में कुछ नहीं जानता था और संबंधित वार्ड में फोन-लाईन मिलाने की सुविधा नहीं थी।

अनुषा ने भी चैन की सास ली कि लड़का सेफ है। फिर उसने दिन का प्रोग्राम बताया- डाईनिंग चेयर्स खरीदने का- जो एलैग्जैंडरा रोड पर मिलेंगी। हम वहां तीन बजे पहुंचे! हमने कम जगह घेरने वाली टेबल-चेयर्स देखी? एक टेबल देखी जो चार बार फोल्ड होकर कॉफी टेबल बन जाती थी। बड़ी सुन्दर थी।

'मैं जानना चाहता हूँ कि 25 साल के बिजनैस मैन को आखिर हुआ क्या था?' मैं बुदबुदाया।

'तुम्हें पता चल जाएगा, उसे जरा ठीक हो जाने दो। जवानी के कुछ कारण होंगे, प्रेम में धोखा, कम नम्बर या ड्रग्स वगैरह।' मैं चुप रहा।

'अब छोड़, भी, उसने तुम्हें ई-मेल किया। तुम्हारे ऑफिस का काम तुम्हारे आगे है। तुम्हें इस बात में और उलझने की जरूरत नहीं है। बताओ कुर्सियां छ : लेनी हैं या आठ?' वह शीशम के बने एक सैट की तरफ बढ़ी।

मैंने कहा हमारे घर इतने कौन से मेहमान आते हैं? छः ही काफी होंगी।

'दो फालतू कुर्सियों की जरूरत मुश्किल से 10 प्रतिशत है।' मैंने कहा।

'तुम आदमी भी बिकुल मददगार नहीं होते?' वह मुड़ी और छः कुर्सियां चुन लीं।

मेरा दिमाग फिर बिजनेसमैन की तरफ घूम गया।

हां, सभी ठीक ही कहते हैं मुझे इस में इतना नहीं उलझना चाहिए? पर फिर भी दुनिया के सारे लोगों को छोड़ कर उसने मुझे ही अपना आखिरी नोट क्यों भेजा। मैं कोई मदद नहीं कर सका पर उलझ जरूर गया हूँ।

हमने आईकिया के आगे फूड कोर्ट में अपना लंच लिया।

'मुझे जाना पड़ेगा मैंने अपनी पत्नी को लेमन राइस खाते हुए बताया।

‘कहां? ऑफिस। ओ.के. मेरा काम हो गया है तुम अब फ्री हो’ मेरी पत्नी ने कहा।’ नहीं। मैं अहमदाबाद जाना चाहता हूँ। मैं गोविन्द पटेल से मिलना चाहता हूँ?’ मैंने उससे नजरें चुराते हुए कहा।

‘क्या तुम पागल हो?’

मेरा ख्याल है कि यह केवल मेरी जैनरेशन में ही कि भारतीय औरतें अपने पतियों को मात देती हैं?

‘मेरा दिमाग बार-बार वहीं जा रहा है।’ मैंने कहा।

‘तुम्हारी प्रेजेंटेशन का क्या होगा? माइकल तुम्हें छोड़ेगा नहीं।’

‘मैं जानता हूँ। उसे प्रोमेशन नहीं मिलेगी अगर वह अपने बॉस को प्रभावित नहीं कर सका।’

मेरी पत्नी ने मेरी ओर देखा? मेरा चेहरा खुद एक वाद बना हुआ था। वह जानती थी कि मैं जब तक उस लड़के को मिल नहीं लूंगा। मैं सहज नहीं हो पाऊँगा।

‘अच्छा, वहां के लिए एक ही सीधी फ्लाइट है शाम छ: बजे। तुम टिकट के बारे में पता कर लो।’ उसने सिंगापुर लाइन का नम्बर मिलाया और फोन मुझे थमा दिया।

नर्सों द्वारा बताए गए कमरे में मैं गया। वहां इतनी चुप्पी और अंधेरा था कि मेरे कदमों की आहट सुनाई दे रही थी। दस डॉक्टरी-उपकरण लगे हुए थे जिनकी तारें उस आदमी पर जा कर खत्म हो जाती थीं। कुछ अंतराल पर लाईटें जलती-बुझती थीं। हजारों मील का सफर तय कर, इस गोविन्द पटेल को मैं देखने आया था।

सबसे पहले मैंने उसके घुंघराले बालों को देखा। उसका रंग गेहुँआ था और भरी भौहें। दवाइयों ने उसके होठों को खुश्क कर दिया था।

‘हाय, चेतन भगत.. लेखक जिसे तुमने लिखा था’ मैंने कहा, विश्वास नहीं था कि वह मुझे पहचाने।

‘ओह, तुम ने मुझे.... कैसे ढूंढ लिया?’ उसने कहा, बोलने में उसे दिक्कत महसूस हो रही थी।

‘मैंने अंदाजा लगाया.... और पहुंच गया।’ मैंने कहा।

मैंने हाथ मिलाया और उसके पास बैठ गया। उसकी मां कमरे में आई। वो भी नींद में लग रही थी। शायद वो भी स्लीपिंग पिल्स का इस्तेमाल करती होगी। मैंने उसका अभिनन्दन किया, फिर वह बाहर चली गई चाय लाने के लिए।

मैंने फिर लड़के की तरफ देखा। मेरी दो प्रबल इच्छाएं जागृत हुई - पहली यह कि उसे पूछूं कि क्या हुआ था, दूसरी कि उसे थप्पड़ मारुं।

उसने अपने बिस्तर से जरा उठते हुए कहा, ‘ऐसे मत देखो तुम मुझ से काफी नाराज हो, सॉरी। मुझे तुम्हें वह मेल नहीं भेजनी चाहिए थी।’

‘मेल को भूल जाओ जो तुमने किया, वो तुम्हें नहीं करना चाहिए था।’

उसने गहरी सांस ली। उसने मुझे पूरा और फिर सब तरफ देखा।

‘मुझे कोई अफसोस नहीं’ उसने कहा।

‘शटअप। इसमें कोई बहादुरी नहीं। डरपोक गोलियां खाते हैं।’

‘तुम भी ऐसा ही करते, अगर तुम मेरी जगह पर होते?’

‘क्यों? तुम्हें क्या हुआ था?’

‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।’

हम खामोश हो गए क्योंकि उसकी मां चाय लेकर आ गई थी। इतने में एक नर्स आई और उसने उसकी मां को घर जाने को कहा पर उसने साफ इंकार कर दिया। आखिर डाक्टर को बीच में पड़ना पड़ा।

वह रात के 11.30 बजे चली गई। मैं कमरे में रुक गया, डॉक्टर से इजाजत लेकर मैं जल्दी ही चला जाऊँगा।

‘चलो, अब तुम मुझे अपनी कहानी सुनाओ’ मैंने कहा जब हम अकेले हो गए। ‘क्यों? तुम मेरे लिए क्या करोगे? जो हो चुका है? उसे तुम बदल नहीं सकते।’ उसने बड़े थके हुए लहजे में कहा। ‘तुम कहानी केवल इसलिए नहीं सुनते कि बीत चुके को बदला जा सके। कई बार यह महत्वपूर्ण होता है कि जाना जाए कि क्या हुआ था।’

‘मैं एक बिजनैसमैन हूँ। मेरे साथ जो भी लोग संबंध रखते हैं केवल अपने फायदे के लिए। तुम्हारा क्या फायदा है इसमें? और फिर मैं अपना समय क्यूं बर्बाद करूं तुम्हें बताने में?’

मैंने उस कोमल से चेहरे को गौर से देखा और देखी उसमें छिपी कठोरता को।

‘क्योंकि मैं इसे दूसरों तक पहुंचाना चाहता हूँ।’ मैंने कहा 'यही मेरी दिलचस्पी है।’

‘क्यों कोई भी इसकी परवाह करे।’ मेरी कहानी कोई डंडी या टैंड्री या सैक्सी नहीं आई आई टी या कॉल-सैंटर्स की तरह।

वो हिला और उसने अपनी रजाई उतार दी जो उसके सीने को ढके हुए थी। हमारे वार्तालाप और हीटर ने कमरे को गर्म रखा।

‘मैं सोचता हूँ, वो परवाह करेंगे।’ मैंने कहा, ‘एक जवान लड़का आत्म-हत्या करने की कोशिश करता है, यह बात जंचती नहीं।’

‘कोई भी मेरी तरफ ध्यान नहीं देता।’

मैंने कोशिश की, पर अपने पर संयम रखना मुश्किल हो रहा था। मैंने उसके थप्पड़ मारने की दुबारा सोची।

‘सुनो,’ मैंने कहा, ऊँची आवाज में जितनी कि हस्पताल में जायज थी। ‘तुमने आखिरी मेल भेजने के लिए मुझे चुना। इसका मतलब है कि काफी हद तक तुम्हें मेरे ऊपर विश्वास था? मैंने तुम्हे ढूंढा और मेल मिलने के कुछ ही घंटों में मैं उड़कर तुम्हारे पास आया हूँ? फिर भी तुम पूछ रहे हो कि मैं तुम्हारी परवाह करता हूँ? और अब तुम्हारा यह - -नजरिया, यह गुस्सा क्या तुम्हारे बिजनैस का हिस्सा है? क्या तुम मेरे साथ एक दोस्त की तरह बात नहीं कर सकते? क्या तुम जानते भी हो कि एक दोस्त क्या होता है?’

मेरी ऊंची आवाज सुन कर एक नर्स कमरे में आई। हम चुप हो गए। घड़ी आधी रात की सूचना दे रही थी।

वह भौचक्का सा बैठा था। आज के दिन सभी ने उसके साथ अच्छा व्यवहार किया था। मैं खड़ा हो गया और उससे थोड़ा दूर चला गया।

‘मैं जानता हूँ कि एक दोस्त क्या होता है!’ आखिर में उसने कहा।

मैं फिर उसके पास बैठ गया।

‘मैं जानता हूँ कि दोस्त क्या होता है! क्योंकि मेरे दो दोस्त थे दुनिया में सबसे अच्छे।

.....

एक

भारत बनाम दक्षिणी अफ्रीका
चौथा, ओ.डी.आई, वडोदरा
17 मार्च, 2000

45 ओवर

‘तुम वहां से हिले क्यों?’ ईशान की चीख स्टेडियम में गूंजी, टी.वी. पर। मैं फर्श से उठ कर सोफे पर बैठ गया। ‘हां?’ मैंने कहा।

हम ईशान के घर पर थे - 'ईशान, ओमी और मैं। ईशान की मां हमारे लिए चाय और खाकरा लेकर आई। सोफे पर बैठकर स्नैक्स खाने में ज्यादा मजा आता है। तभी मैं सोफे पर बैठ गया था।

‘तेंदुलकर गया। ओह ऐसे समय। ओमी तुम हिलना मत। कोई भी अगले पांच ओवर्स में हिलेगा नहीं।’

मैंने टी.वी. की तरफ देखा। हमें जीतने के लिए 283 रन चाहिए। एक बॉल से पहले इंडिया के 256-2 रन थे 45 ओवर के बाद। पांच ओवरों में 27 रन बनाने थे और हमारे पास 8 विकेट थे और तेंदुलकर खेल रहा था। सब कुछ ठीक चल रहा था, भारत के पक्ष में, पर तभी तेंदुलकर आऊट हो गया। उससे ईशान की त्यौरियां चढ़ गई।

‘खाकरे बड़े क्रिस्पी हैं, ओमी ने कहा। ईशान ने उसे घूर कर देखा, उसकी घिघली बात पर जब कि देश का मान-सम्मान दांव पर लगा हुआ था। ओमी और मैंने अपने कप एक तरफ रख दिए और दुखी सा मुंह बनाकर बैठ गए।

भीड़ ने तालियां बजाई जब तेंदुलकर क्रीज से बाहर हुआ। जड़ेजा क्रीज पर आया और उसने छः रन बनाए। 46 ओवरों के बाद भारत की स्थिति 263-3 की थी। अब चार ओवरों में 21 रन और बनाने थे, सात विकेट बचे थे।

ओवर 46

‘उसने 122 बना लिए। उसने अपना काम कर दिया। कुछ ही आखिरी शॉटस रहते हैं। पर तुम इतने उतावले क्यों हो रहे हो।’ मैंने टी.वी. पर अन्तराल के दौरान कहा। मैं अपना चाय का कप उठाने लगा पर ईशान ने न उठाने का इशारा किया। हम किसी भी तकरार में नहीं पड़ना चाहते थे जब तक मैच का कोई फैसला नहीं हो जाता। ईशान ने किसी भी तरह हम को हिलने नहीं दिया। मैच वडोदरा में हो रहा था, अहमदाबाद से दो घंटे का रास्ता है। पर हम वहां नहीं जा सके। एक तो हमारे पास पैसे नहीं थे,

दूसरे दो दिन में मेरे पत्र-व्यवहार के पेपर थे। मैंने सारा दिन मैच देखने में लगा दिया इसलिए दूसरा कारण कोई अर्थ नहीं रखता।

5.25 रन एक ओवर में चाहिए। ‘मैंने कहा मैं कैल्कुलेट किए बिना नहीं रह पाया। यही कारण है कि मुझे क्रिकेट पसंद है क्योंकि इसमें मैथ्स ज्यादा है।

‘तुम इस टीम को नहीं जानते। तेंदुलकर आऊट हो गया है। बाकी टीम उखड़ गई है। बात प्रतिशतता की नहीं। यह तो ऐसे है जैसे रानी मक्खी मर जाती है और छत्ता बिखर जाता है।’ ईशान ने कहा।

ओमी ने सिर हिलाया जैसे कि वे हमेशा करता है जब भी ईशान क्रिकेट के बारे में कोई बात करता है।

‘चलो छोड़ो, मेरा ख्याल है कि तुम जानते हो कि इम यहां मैच देखने के लिए इकट्ठे नहीं हुए। हम यहां यह फैसला करने के लिए इकट्ठे हुए हैं कि मि. ईशान अपने भविष्य में क्या करना चाहते हैं?’ मैंने कहा।

ईशान हमेशा ही इस विषय पर बात करने से कतराता है, जब से वह एन.डी.ए से भागा है एक वर्ष पहले। उसके डैड हमेशा उस पर व्यंग्य कसते हैं कि 'हर साल केक काट कर मनाया करो कि एक साल तुम्हारा व्यर्थ हो गया।’

आज मैं उसके लिए एक प्लान बना कर लाया था। मैं जानता था कि हम सब इकट्ठे बैठें और अपने जीवन के, भविष्य के विषय में बातचीत करें। बेशक क्रिकेट के आगे जिन्दगी दूसरे नंबर पर आती है।